महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का कुमार गंधर्व राष्ट्रीय सम्मान के

अलंकरण समारोह में उद्बोधन

स्थान:- मुम्बई, दिनांक:- 25 फरवरी, 2013 समय:- शाम 6 बजे

मेरे लिए यह सौभाग्य का अवसर है। मुझे आज यहाँ विश्वविख्यात गायक पद्मविभूषण स्वर सम्राट पंडित कुमार गंधर्व के नाम से स्थापित कुमार गंधर्व फाउन्डेशन मुम्बई द्वारा वर्ष 2012 का तेरहवां कुमार गंधर्व राष्ट्रीय सम्मान से उस्ताद विलायत खां के सुयोग्य शिष्य जाने माने सितार वादक पंडित अरविन्द पारिख को अलंकृत करने का सुअवसर मिला है।

यह बहुत ही दुर्लभ अवसर है जब मैं यहाँ देश के प्रख्यात और लोकप्रिय गायक और संगीतकारों के बीच में उपस्थित हुआ हूँ और उन्हें सम्मानित करने का गौरव प्रदेश की ओर से मुझे प्राप्त हुआ है।

'कला से प्रेम करना सिर्फ इन्सान से प्रेम करना नहीं है, कुदरत से भी प्रेम करना है।' जब फाग के बाद जेठ के महीने में धरती सूखी होती है और उस पर छोटी सी बदली आये,बरसात की फुहारें गिर जायें तो कैसा अच्छा और सुन्दर लगता है। यही तो कला है और कला का नमूना है। कलाकार क्या बनाता है,पत्थर में क्या जान डालता है,पत्थर को सजीव बना देता है। इसी प्रकार संगीत है। संगीत भी तो एक प्रेरणा है,एक उजाला है जो अन्तर से उपजता है। हर कोई गा तो नहीं सकता लेकिन आनन्द जरूर ले सकता है। जो आदमी कला से प्रभावित नहीं होता वह रूखा होता है।

कालिदास और कुमारगंधर्व जैसे कलाकार चित्रकार, संगीतकार और साहित्यकार बहुत कम होते हैं और ये समाज में सुख बांटते हैं, सच्चा इन्सान बनाने में मदद करते हैं, इन्हें हर हाल में प्रोत्साहन देना चाहिए, इनका सम्मान किया जाना चाहिए। इनका काम समाज को जोड़ना है, ये प्रेम और संवेदना के वाहक हैं। अपनी कला से लोगों को आनन्दित करते हैं।

कुमार गंधर्व ने जब मात्र नौ वर्ष की उम्र में एक आश्रम में गाया तो उस आश्रम के संत ने कहा यह कोई साधारण बालक नहीं है यह तो इस धरती पर साक्षात गंधर्व है। और उन्होंने 'कुमार गंधर्व' कहकर संबोधित किया तब से 'शिवपुत्र सिद्धरमैरय्या कोमकली' 'कुमार गंधर्व' बन गये। उनकी सांगीतिक नैसर्गिक प्रतिभा बाल्यापन से ही झलकती थी। किसी का गायन अथवा रेकार्ड सुनकर हुबहू वैसा ही गाना सुना देना आपके लिए एक सहज कार्य था।

संगीत जगत में बिरला संगीतज्ञ कुमार गंधर्व ही ऐसे थे, जो शास्त्रीय संगीत के साथ लोकगीत, भजन आदि उतने ही चाव के साथ गाते थे। राजस्थानी तथा मालवी लोकगीतों पर आपने काफी रिसर्च किया तथा अनेकों शास्त्रीय रागों को बनाया जैसे मालवती, लगन गंधार, संजारी निंदियारी, रात का मघवा, सहेली तोडी, राही, बीहड़ भैरव इत्यादि। वर्ष 1947 के पहले ही कुमार गंधर्व मुंबई से मध्यप्रदेश के देवास में रहने के लिए आ गये और यहां की लोकधुनों पर बहुत कार्य किये। सैकड़ों लोकधुनों का संकलन कर आपने दर्जनों शास्त्रीय रागों को जन्म दिया। कुमार जी लोकसंस्कृति तथा लोकगायन के पक्षधर थे। वे कहते थे की हमारे जिन ऋषि-मुनियों

ने रागों का इजाद किया है वे इन्हीं लोक परंपरा से ही मिले हैं और हिन्दुस्तानी संगीत को आधार लोकगीत ही है।

कुमार गंधर्व जी ने एक तरफ जहां हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन को समृद्ध किया वहीं भारतीय संत परंपरा के पुरोधाओं कबीर, सूर, मीरा तुलसी, नानक, तुकाराम तथा नाथ परंपरा के संतों की वाणी को आवाज देकर भारत के घर-घर में पहुँचाया। कबीर को तो कुमार जी ने ऐसा गाया कि उनको आधुनिक कबीर कहा जाने लगा।

हिन्दुस्तानी संगीत में नये-नये प्रयोग कर कुमार जी ने नये कलाकारों के लिए रास्ता खोला कि वे भी कुछ नया कर सकें। वे लकीर के फकीर कलाकार नहीं थे। वे कहते थे की दुनिया में तमाम बदलाव आ रहे हैं तो भारतीय शास्त्रीय संगीत में क्यों नहीं होने चाहिए और उन्होंने लोगों की परवाह किये बिना नये-नये बदलाव के साथ गायन जारी रखा।

गाना हर कोई जानता है, लेकिन कुछ नया गाना हर कोई नहीं जानता। उसमें भी हर दिन कुछ नया गाना जो गाता है उसे गंधर्व कहते हैं। कुमार गंधर्व ऐसे ही गंधर्व थे। उनके लिए हर विहान सुरों का विहान होता था और सांझ की गोंधुलि एक सृजन का आयाम होता था।रोज सुरों का घरौंदा बनाना और उसे छोड़ जाना, उसकी ओर फिर मुड़कर नहीं देखना, यही तो फकीरी है। यही तो कबीर करते थे। यही तो कुमार गंधर्व भी करते थे। वह सदा आज को जीते रहे उनका कल कभी आया ही नहीं।

आज यहाँ कला रसिकों और विद्वतजनों के बीच आपको सम्मानित और अलंकृत करके हम स्वयं को भी गौरवान्वित मान रहें हैं। अगर हम सब, उनकी कला की परख नहीं करेंगे तो हम निष्प्राण आदमी हैं। कलाकार तो हमारी संस्कृति और समाज को एक नई चाहत और ऊर्जा देते हैं। बिना भेद-भाव के आनन्द की वर्षा करते हैं।

आज जिन महान शख्सियतों को सम्मानित करने का मौका मुझे मिला है उन सबको मेरा आदर और प्रणाम।

जय हिन्द।